॥ श्रीः ॥

एम. ए. बना के

क्यों

मेरी मिट्टी खराब की?

अनुवादक—

छन्नूलाल द्विवेदी

वह आधुनिक शिक्षा किसी विध प्राप्त भी कुछ कर सको-
तो लाभ क्या, बस क्लर्क बन कर पेट अपना भर सको!
लिखते रहो जो सिर झुका सुन अफसरों की गालियाँ
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियाँ घरवालियाँ!
'मैथिलीशरण गुप्त'

प्रकाशक—

पुस्तक-भवन

बनारस

प्रथम बार] १९२३ [मूल्य २)